3-2-67 ओम शान्ती प्रातः क्लास

रूहानी बाप रूहानी बच्चों को समझा रहे हैं। रूहानी बाप कहाँ से आये है? रूहानी दुनिया से। जिसका दूसरा नाम निर्वाण धाम अथवा शान्ती धाम कहा जाता है। यह है तो गीता की बात। तुमसे पूछते हैं यह ज्ञान कहाँ सेआया? बोलो यह तो वो ही गीता का ज्ञान है। गीता का पार्ट चल रहा है।और बाप पढ़ाते है।भगवानोवाच्य है नाँ। और भगवान तो एक ही है। वो है शान्ती का सागर। रहते भी है शान्ती धाम में। जहाँ हम आत्मा भी रहते है। बाप समझाते है कि यह है पतित दुनियाँ। पापआत्माओं की तमोप्रधान दुनियाँ। तुम भी जानते हो कोवृ इस समय हम आत्मायें तमोप्रधान है। 84का चक्र खाकर सतोप्रधान से अब आकर तमोप्रधान बने है। यह पुरानी अथवा कलियुगी दुनिया है। यह नाम सब इसी समय के है। पुरानी दुनिया के बाद फिर नई दुनिया होती है।भारत वासी ही यह भी जानते है कि जब महाभारत की लड़ाई लगी तब ही नई दुनिया बदली थी,तब ही बाप ने आकर राज योग सिखाया था। सिर्फ भूल हुई है कि कल्प की आयु भूल गये है। और गीता के भगवान को भी भूल गये है। कृष्ण को तो गाड फादर कह नही सकते। आत्मा कहती है गाड फादर। तो वो निराकार हो गये। निराकार बाप आत्माओं को कहते है कि मुझे याद करो। मै ही पतित पावन हूँ। मुझे बुलाते भी है हे पतित पावन...कृष्ण तो देह धारी है नाँ। मुझे तो कोई शरीर है नही। मै हूँ निराकार। आत्माओं का बाप। मनुष्यों का बाप नही। मै आत्माओं का बाप हूँ। यह तो पक्का कर देना चाहिये घड़ी घड़ी।हम आत्मायें इस बाप से वर्सा लेते है। अभी 84जन्म पूरे हुये है। बाप आया है। बाबा,बाबा ही करते रहना है। बाबा को बहुत याद करना है। सारा कल्प जिसमानी बाप को याद किया है। अभी बाप आये है और मनुष्य सृष्टी से सब आत्माओं को वापस ले जाते है।क्यों कि रावण राज्य मे मनुष्यों की दुर्गती हो गई है।इस लिये अब बाप को बहुत याद करना है। यह भी मनुष्य कोई समझते नही है कि अभी रावण राज्य है। रावण का अर्थ ही नही समझते। बस एक रसम हो गई है दुशहरा मनाने की। तुम कोई थोड़ेई समझते थे। अभी समझ मिली है औरों को समझाने लिये। अगर और को ही नही समझा सकते है तो गोया खुद ही नही समझे है।फिर तो जैसे उनको आसुरी बन्दर सम्प्रदाय कहा जाता है वैसे, वैसे नाँ समझ वाले भी बन्दर सम्प्रदाय हो जाते है।बाप मे सृष्टी चक्र का ज्ञान है। हम उनके बच्चे है तो बच्चों मे भी वो नालेज रहनी चाहिये।पहले नही थी गोया निधणके थे। अभी धणी के बने हैं। धणी बाप है नाँ। वो पतियों का पति है। तुम्हारी यह है गीता पाठशाला। उदेश्य क्या है? लक्ष्मी नारायण बनना। यह राजयोग है नाँ। नर से नारायण नारी से श्रीलक्ष्मी बनते है। की एक नालेज है। वो लोग कथायें बैठ सुनाते है। यहाँ तो हम पढ़ते है। हमको बाप राजयोग पढ़ाते है। बाप यह सिखाते ही है कल्प के संगम युग पर। बाप कहते है मै कल्प के संगम युग पर ही आता हूँ। पुरानी दुनिया को बदल नई दुनिया बनाने आता हूँ। नई दुनिया मे इनका राज्य था। पुरानी मे नही है। फिर जरूर होना चाहिये। चक्र कोतो जान लिया है। मुख्य धर्म भी है चार। अभी डीटीज्म है नही। कोई भी अपने धर्म को नही जानते है।दैवी कर्म भ्रष्ट और दैवी धर्म भ्रष्ट बन गये है। अभी फिर तुमको दैवी धर्म श्रेष्ट और दैवी कर्म श्रेष्ट सिखा रहे है। तो अपने पर ध्यान रखना है हमसे कोई आसुरी कर्म तो नही होता है। माया के कारण कोई खराब खयालात तो बुधी मे नही आते। कुदृष्टी तो नही रहती है। देखा इनकी कुदृष्टी जाती है वा खराब खयालात आती है तो उनको झट सुधारना चाहिये। झट सावधान करना चाहिये।उनसे मिल नही जाना चाहिये। उनको सावधान करना चाहिये तुम्हारे मे यह मायावी की प्रवेशता होने कारण यह खराब खयालात आती है। योग मे बैठे कोई दूसरे देहधारी की याद आती है तो समझना चाहिये यह हम पर माया का वार हुआ है।मै पाप कर रहा हूँ। इसमें तो बहुत शुधी होनी चाहिये। शुध वचन निकलने चाहिये। कुवचन नही। चंचा आद भी नही।ऐसे नही कि हमने तो हसीं की। वो भी नुकसान कारक हो जाती है। हसीं भी ऐसी नही करनी चाहिये जिसमे विकारों की वायु हो। बिलकुल नही।

वहुत खबरदार रहना है। तुमको मालूम है यह जो नंगे लोग है उनकी विकारों की तरफ कब ख्याल भी नही जावेगा। रहते भी अलग है। आजकल तो तमोप्रधानता होने कारण उनकी भी दृष्टी कोईनों कोई तरफ लटक जाती है। विकारों में नही जाते है नां। वो तो दवाईयों से प्रबन्ध कर लेते है जिससे नंगे रहते है। नही तो मनुष्य कब नंगे रह नही सकते। यह चलायें मानी सिवाय योग के कब निकल नही सकती है। कायदा तु ऐसा है जो योग में नही होंगे और कोई को भी देखेंगे तो चलायें मान हो जावेंगे। अपनी परीक्षा लेनी होती है। बाप की याद में ही रहते है तो कोई भी प्रकार की बिमारी नां रहे। पुरुषों की बिमारी और है। स्त्रीयों की और है। यह जो बिमारी होती है जो नाईफ कर लेते है, योग में रहने से वो कब नही होगी। सतयुग में तो कोई भ प्रकार का गन्द नही रहता। नां एम, सी, नां डिस्चार्ज आद होता है। वहां रावण की चंचलता ही नही जो कि चलायें मानी हो। एम, सी, भी गन्द है नां। वहां तो योगी लाईफ रहती है। तो अपनी जांच रखनी है कहीं डिस्चार्ज तो नही होते है। अगर होती है तो योग कम है। अवस्था वहुत पक्की चाहिये। योगवल से यह सब बिमारीयां बंद हो जाती है। इसमें वहुत मेहनत है। राज्य लेना कोई मासी का घर नही, पुरुषार्थ तो करना ही होता है नां। ऐसे नही किवस जो होगा भाग्य में सो मिलेगा। धारना ही नही करते, गोया पाईपैसे के पद पाने लायक है। सब्जेक्टस तो वहुत होती है नां कोई ड्राईंग, कोई खेल आद में मार्क्स ले लेते है। वो है कामन सब्जेक्ट। वैसे ही यहां भी सब्जेक्टस है कुछ नां कुछ मिलेगा। बाकी बादशाही नही मिल सकेगी। वो तो सर्विस करेंगे तब तो बादशाही मिलेगी। उसके लिये वहुतमेहनत चाहिये। वहुतों की बुधी में तो बैठता ही नही। जैसे कि खाना हज्म नही होता। ऊंच पद पाने की हिम्मत नही। इसको भी बिमारी कहेंगे नां। कोई भी बात को नां देख कर रूहानी बाप की याद को लग जाना चाहिये। याद में रह कर औरों को रस्ता बताना है। अन्धों की लाठी बनना है। तुम तो रस्ता जानते हो। रचता और रचना का ज्ञान, मुक्ति जीवन मुक्ति तुम्हारे बुधी में फिरती रहती है जो जो महारथी है। बच्चों की अवस्था में भी रात दिन का फर्क आता है। कई वहुत धनवान बन जाते है। है। कहीं विलकुल गरीब। राजाई पद में तो फुंक है नां। बाकी हां वहां राजाई होने कारण दुःख नही होता है। बाकी सम्पत्ति में तो फर्क है नां। सम्पत्ति से सुख होता है। जितना योग रखेंगे हेल्थ अच्छी वड़ी होगी। मेहनत करनी है। वहुतों की तो चलन ऐसी रहती है जैसी अज्ञानी मनुष्यों की होती है। वो किसी का कल्याण क्या कर सकेंगे। जब परीक्षा होती है तो मालूम पड़ जाता है कौन कितने मार्क्स से पास होंगे। फिर उस समय हायःहायः करनी पड़ेगी। बाप दादा दोनों ही कितना समझाते थे। फिर भी पढ़े नही। यह-2 कर्म किया। वो सब सामने आवेंगे। सब सा० होता जाता है। उसमें देरी नही लगती। बाप तो सब बातें समझाते है। बाप आते ही है कल्याण करने। अपना भी कल्याण करना है तो दूसरों का भी करना है। बच्चे बाप को बुलाया भी है कि हम पतितों को पावन होने का रस्ता बताओ तो बाप श्रीमत देते है। तुम अपने को आत्मा समझ और देहअभिमान छोड़ मुझे याद करो। कितनी सहज दवाई है। बोलो हम सिर्फ एक भगवान को मानते है। वो कहते है कि मुझे बुलाते हो कि पतितों को पावन बनाने आओ तो मुझे आना पड़ता है। ब्रहमा से तुमको कुछ भी मिलता नही है। ब्रहमा की आत्मा को भी हमसे मिलता है। बोलो ब्रहमा कोई हमारा गुरु आद कुछ भी नही है। वो तो दादा है। बाबा भी नही है। बाबा से तो वर्सा मिलता है। ब्रहमा से थोड़ेई वर्सा मिलता है। इसलिये ही हम ब्रहमा का चित्र भी नही देते है। निराकार बाप इन दवारा ऐक्ट्रप्ट कर हम आत्माओं को पढ़ाते है। इनको भी पढ़ाते है। ब्रहमा से तो कुछ भी मिलने का है नही। वर्सा बाप से ही मिलता है। इन दवारा। बाकी ब्रहमा की कोई वैल्यु नही है। देने वाला एक है। वो ही सर्व का सदगती दाता है। यह तो पुज्य से फिर पुजारी बनते है। सतयुग में थे फिर 84जन्म भोग अब पतित बने है। फिर पूज्य पावन बन रहे है। और कोई यहां बात नही। हम

बाप द्वारा ही सुनते है। कोई मनुष्य सें नही सुनते। मनुष्यों का है ही भक्ति मार्ग। यह है रूहानी ज्ञान मार्ग। भक्ति में ज्ञान नही होता है। ज्ञान सिर्फ एक ज्ञान सागर में है। बाकी यह शास्त्र आद सब भक्ति के है। यह शास्त्र आद पढ़ना भक्ति की आथरटी है। ज्ञान का सागर तो एक ही बाप है। हम ज्ञान नदियाँ ज्ञान सागर सें निकली है। बाकी वो है पानी के सागर और नदियाँ आद भक्ति मार्ग की। बच्चों को यह सब ध्यान में रहना चाहिये अन्तर्मुखी हो कर बुद्धी चलनी चाहिये। अगर मुख सें कोई कुवचन निकलें वाँ, कुदृष्टी जावें तो अपने को फटकारना चाहिये। हमारें मुख सें कैसे-2 कुवचन क्यों निकलें। कुदृष्टी हमारी क्यूं गई। अपने को चमाट भी मारनी चाहिये अपने को। तब तो ऊँच पद पा सकेंगें। मुख सें कब कुवचन नां निकलें। बाप की तो बात और है उनको तो शिक्षा देनी होती है। किसीको चर्या कहना यह भी कुवचन है। बाप तो कहते है सब मेड् चैप्स है। जिनको याद करते है उनको जानते ही नही तो उनको मेड् चैप्स ही कहेंगें नां। इडियट याँ मेड्चैप्स कहे बात तो एक ही है नां। देवताओं के आगें बैठ कर उनकी महिमा गाते है। और कुछ भी नही समझते तो मेड्चैप्स हुयेनां। जो आता है वो कहते जाते है। जानते कुछ भी नही कि हम किसकी महिमा गाते है। महिमा तो करनी ही चाहिये एक पतित पावन बाप की। और तो कोई है नही। ब्रह्मा विष्णु शंकर को पतित पावन नही कहा जाता है। यह तो कोई को पावन बनाते नही। पतित सें पावन बनानें वाला एक ही बाप है। पावन सृष्टी है ही नई दुनियाँ। वो तो अभी है नही। प्योरटी है ही स्वर्ग में। पवित्रता का सागर भी बाप ही है। यह तो है ही रावण राज्य। सन्यासी आद समझते है हम प्योअर है। भल सन्यास करते है परन्तु जन्म तो भ्रष्टाचार सें होता है नां। यह है ही रावण राज्य। सबके शरीर भ्रष्टाचार से पैदा हुये है। तो भ्रष्टाचार को पावन नही कहेंगें। बोलो तुम भी भ्रष्टाचारी हो। तब तो कहते हो है पतित पावन आओ। बाप सब राज समझाते है परन्तु सन्यासी आद सें फिर बात करनें वाले भी महारथी चाहिये ऐसे मक्के खानें वाले चर्यें खराये तो बहुत आते है। पेट की दो रोटी मिल जाती है। पाप भी बहुत करते रहते है। ऐसे बहुत पापात्मायें भी सन्यासी बनते है। पुलिस भी सन्यासियों की ड्रेस में रहती है। जांच करने लिये। उनके पास डाकुओं आद के चित्र तो रहते है नां। सी, आई, डी, वालों को खास शिक्षा मिलती है जांच करने लिये। यह खास काम सीक्रेट रखते है। तो बच्चों को कोई भी मुख सें पत्थर वाँ कुवचन नही निकालनें चाहिये। बहुत प्यार सें चलना चाहिये। कुदृष्टी भी बड़ा नुकसान कर देती है। बहुत मेहनत चाहिये। आत्मा अभिमान है अविनाशी अभिमान। देह तो विनाशी है। आत्मा को कोई भी जानते नही है। आत्मा का भी बाप तो जरूर कोई होगा नां। कहते भी है सब भाई-2 तो सबमें परमात्मा बाप कैसे विराजमान हो सकते है। इतना भी अक्ल नही है। सबका बाप तो एक है। इनसें ही वर्सा मिलता है। उनका नाम है शिव। शिव रात्री भी मनाते है। रूद्र रात्री याँ कृष्ण रात्री नही कहा जाता। मनुष्य तो कुछ नही समझते है कहेंगे वो सब उनके ही रूप है। अब तुम समझते हो बाप सें तो वर्सा मिलता है। तो बाप की श्रीमत पर चलना है। बाप कहते है मुझे याद करो। लेकिन को भी यही शिक्षा दो तो उनका भी कल्याण हो जावेंगे। परन्तु खुद ही याद नही करते है तो औरों को क्या याद दिलावेंगें। रावण एकदम शैतान बना देते है। परसतानी बनाते है। बन्दर है नां। कुछ भी बुद्धी में नही है। यह लक्ष्मी नारायण कितना ऊँचे परस्तानी से कितना नीच शैतानी बन जाते है। इसलिये ही ब्रह्मा का दिन ब्रह्मा की रात गाया हुआ है। शिव के मन्दिर में तुम बहुत सर्विस कर सकते हो। बाप कहते है हमको याद करो और दर दर भटकना छोड़ दो। यह ज्ञान है ही शान्ती का। बाप को याद करनें सें तुम सतोप्रधान बन जावेंगें। बस यही मन्त्र देते रहो। कोई का भी पैसा नही लेना चाहिये जब तक कि पक्का नां हो। बोलो प्रतिज्ञा करो कि हम पवित्र रहेंगें तो हम तुम्हारे हाथ का खा सकते है। ढेर मन्दिर है। फारेनर्स आद जो भी आवें उनको भी यह संदेश दे सकते हो कि बाप को याद करो। अच्छा मीठे-2 सिकीलधे बच्चों को बाप दादा का याद प्यार गुड्मार्निग और नमस्ते